

विकलेंद्रिय पुं. (तत्.) 1. जिसकी इंद्रियाँ विकृत हो गई हों 2. जिसका अपनी इंद्रियों पर अधिकार न हो, असंयमित।

विकल्प पुं. (तत्.) 1. किसी कार्य, वस्तु आदि की वह स्थिति जिसके बदले अन्य स्वीकार्य व्यवस्था हो। अर्थात् यह अथवा वह 2. उपाय 3. भेदयुक्त ज्ञान 4. अनिश्चय 5. एक समाधि 6. किसी कल्पना, विचार से भिन्न कल्पना 7. व्या. कई नियमों में से एक का ग्रहण 8. काव्य. एक अर्थालंकार जहाँ दो समान बल वाली विरुद्ध बातों को लेकर एक ही समय में उत्पन्न उस स्थिति का चमत्कारी वर्णन होता है। कोश. किसी शब्द के ऐसे रूप जो एक दूसरे की स्थिति में रखे जा सकते हैं आयु. पुं रोगी के शरीर में वातादि दोषों से संबंधित ज्ञान योग. शब्दज्ञानानुपाती वस्तु शून्य वृत्ति जैसे- बंध्यापुत्र से अर्थात् बांझ स्त्री के पुत्र में आकार रूप चित्त की वृत्ति को विकल्प माना गया है।

विकल्पन पुं. (तत्.) 1. विकल्प करने की क्रिया या भाव 2. संदेह मानना 3. दो या दो से अधिक विषयों में से किसी एक को मानना 4. अनिश्चय।

विकल्पात्मक वि. (तत्.) 1. जिसका विकल्प निश्चित हो 2. ऐच्छिक 3. अनिश्चयात्मक 4. जिसकी अनिवार्यता न हो।

विकल्पित वि. (तत्.) 1. जो विकल्प के रूप में गृहीत हो 2. व्यवस्थित 3. विभक्त 4. जिस पर संदेह किया गया हो, संदिग्ध 5. अनिश्चित 6. अनियमित।

विकल्पी वि. (तत्.) 1. संकल्प-विकल्प में पड़ा रहने वाला 2. जो असमंजस या दुविधा की स्थिति में हो विलो. संकल्पी।

विकल्मष वि. (तत्.) 1. जो कल्मष अर्थात् पाप रहित हो 2. निर्दोष 3. कलंक रहित।

विकसना अ.क्रि. (तद्.) 1. विकसित होना 2. पुष्प आदि का खिलना 3. प्रस्फुटित होना।

विकसाना क्रि. (तद्.) 1. विकसित करना 2. विकसित करने में प्रवृत्त करना, फूलों को विकसित करने के लिए प्रवृत्त करना, फूल खिलाना।

विकसित वि. (तत्.) 1. जो विकास को प्राप्त हो, जिसका विकास हुआ हो 2. खिला हुआ पुष्प 3. वह राज्य या राष्ट्र आदि जिसका सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पूरी तरह विकास किया गया हो।

विकस्वर वि. (तत्.) 1. स्पष्ट सुनाई देने वाला शब्द 2. खुला हुआ, प्रफुल्ल 3. काव्य. पुं. 1. विकासशील 2. एक अर्थालंकार जिसमें विशेष बात का समर्थन सामान्य बात से किया जाता है।

विकांक्ष वि. (तत्.) 1. आकांक्षा रहित, इच्छा रहित 2. निष्काम।

विकाम वि. (तत्.) 1. जिसमें किसी प्रकार की कामना न हो, कामनारहित, इच्छारहित 2. निष्काम।

विकासात्मक वि. (तत्.) 1. जो विकास से संबंधित हो 2. जिसका विकास संभव हो, विकासयुक्त, विकासपरक।

विकार पुं. (तत्.) 1. किसी वस्तु की प्रकृति में रूप, धर्म, गुण आदि की दृष्टि से होने वाला परिवर्तन 2. किसी पदार्थ की स्वाभाविक अवस्था में होने वाला दोषपूर्ण परिवर्तन 3. मल 4. रोग 5. वासना 6. क्षोभ 7. जख्म दर्श. किसी पदार्थ के रूप आदि में होने वाला परिवर्तन, परिणाम जैसे- दही, दूध का विकार है।

विकारश्रयी वि. (तत्.) 1. जो विकार पर आश्रित रहने वाला हो 2. जो विकार पर आधारित हो।

विकारश्रयी कामदी स्त्री. (तत्.) पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अनुसार 'कामदी' का वह प्रकार जिसमें मानव चरित्र की विकृतियों और भ्रांतियों की विवेचन करते हुए उनकी भर्त्सना की जाती है।

विकारी वि. (तत्.) 1. विकार वाला, विकारशील 2. विकारयुक्त, विकारग्रस्त 3. क्रोध आदि मनोविकारों